

इरविंग गॉफमैन

Erving Goffman

गॉफमैन 1960 तथा 1970 में एक प्रभावशाली सूक्ष्म (Micro) समाजशास्त्री रहे। ये अमरीका के थे और इन्होंने टोरंटो तथा शिकागो के विश्वविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त की। इनका नाम ब्लूमर के साथ भी जोड़ा जाता है। पिछले अध्याय में हमने क्लासिकल सिद्धान्तवेत्ताओं की पृष्ठभूमि के रूप में विस्तृत विवरण दिया है। इस अध्याय में हम उन समाजशास्त्रियों का उल्लेख करेंगे जो पारस्परिक क्रिया सिद्धान्त से जुड़े हुए हैं, यद्यपि ये सिद्धान्तवेत्ता क्लासिकल विचारकों से एकदम जुदा हैं फिर भी इन्होंने इन विचारकों से बहुत कुछ उधार लिया है।

सूक्ष्म समाजशास्त्रियों के विपरीत क्लासिकल समाजशास्त्री महान सिद्धान्तवेत्ता (Grand Theorists) कहे जाते हैं। जब हम विचारकों की व्याख्या करते हैं तब उनमें हर्बर्ट मीड, रॉबर्ट पार्क और ब्लूमर का नाम विशेष रूप से लिया जाता है। इन विचारकों ने पारस्परिक क्रिया सिद्धान्त की परम्परा को एक व्यवस्थित रूप दिया।

पारस्परिक क्रिया की परम्परा (Tradition of Interaction)

जितने भी सूक्ष्म समाजशास्त्री (Micro-Sociologists) हैं, वे पारस्परिक क्रिया सिद्धान्तवेत्ता (Interaction Theorists) हैं। इन सिद्धान्तवेत्ताओं की निम्न विशेषताएँ हैं:

1. ये सिद्धान्तवेत्ता आनुभविक हैं। ये किसी भी वस्तु को बहुत निकटता से देखते हैं।
2. पारस्परिक क्रिया सिद्धान्तवेत्ताओं का सम्बन्ध अमरीका के शिकागो सम्प्रदाय या स्कूल (Chicago School) से था। यह स्कूल अपनी कुछ विशेषताएँ रखता था।
3. शिकागो स्कूल सामान्यतया शहरी जीवन का अध्ययन करता था। इसके अध्ययन क्षेत्र में अपराध, बाल-अपराध और मानसिक रूप से रोगी व्यक्ति आते थे।
4. सूक्ष्म समाजशास्त्री वास्तव में आमूलचूल समाजशास्त्र (Radical Sociology) का निर्माण करते थे। ये चाहते थे कि समाज में सुधार हो और लोगों का जीवन स्तर ऊँचा उठे।

5. क्लासिकल विचारक सम्पूर्ण समाज को अपने अध्ययन क्षेत्र में लाना चाहते थे। दुर्खीम, वेबर और कार्ल मार्क्स ने स्थानीय और छोटे समूहों का कोई उल्लेख नहीं किया है, लेकिन पारस्परिक क्रिया सिद्धान्तवेत्ता प्रायः छोटे समूहों पर ही अपने आप को केन्द्रित करता है।

6. यह निश्चित है कि पारस्परिक क्रिया सिद्धान्तवेत्ता आनुभविक अध्ययन में बहुत कुशल और तीव्र बुद्धि थे, लेकिन जहाँ तक सिद्धान्त निर्माण का सवाल है वे बहुत कमजोर थे। इसी कारण 20वीं शताब्दी के प्रथम भाग को समाजशास्त्र में आनुभविकता-प्रधान समय कहा जाता है। यह कहना गलत नहीं होगा कि पारस्परिक क्रिया सिद्धान्तवेत्ताओं की अध्ययन विधि आनुभविक ही थी।

इरविंग गॉफमैन एक महत्वपूर्ण विद्वान थे। दूसरे विश्व युद्ध के बाद गॉफमैन अमरीका में चोटों के समाजशास्त्री बन गए। उनका कृतित्व काल 1952 से लेकर उनकी मृत्यु तक 1983 तक रहा। गॉफमैन ने कई महत्वपूर्ण कृतियाँ लिखीं, इनमें स्टिगमा (Stigma, 1964), एसिलम (Asylum, 1961), एनकाउन्टर्स (Encounters, 1961), बिहेवियर इन पब्लिक प्लेसेस (Behaviour in Public Places, 1963), रिलेशन्स इन पब्लिक (Relations in Public, 1971), फ्रेम एनालिसिस (Frame Analysis, 1974) तथा अन्तिम पुस्तक फोर्म्स ऑफ टॉक (Forms of Talk, 1981) सम्मिलित हैं।

यहाँ यह कहना चाहिए कि गॉफमैन के बौद्धिक विकास में दुर्खीम और सिमेल का प्रभाव बहुत महत्वपूर्ण है। इन दोनों विचारकों से गॉफमैन ने बहुत कुछ सीखा। उन्होंने देखा कि दुर्खीम ने व्यक्ति को हाशिये पर खड़ा कर दिया था। उनके लिए तो समाज ही वास्तविकता था। दुर्खीम ने नैतिकता पर अधिक जोर दिया था। यही जोर हमें गॉफमैन में देखने को मिलता है। गॉफमैन कहते हैं कि जो भी पारस्परिक क्रिया होती है, वह समाज नहीं करता, व्यक्ति ही करता है। गॉफमैन के लिए तो समाज एक छोर पर था और व्यक्ति दूसरे छोर पर। रॉबिन विलियम्स कहते हैं कि गॉफमैन पर सामाजिक तथ्य का प्रभाव बहुत अधिक था। दुर्खीम की तरह जब सिमेल सामाजिक स्वरूपों की चर्चा करते हैं तो इनका प्रभाव भी गॉफमैन पर देखने को मिलता है। गॉफमैन के सिद्धान्त की हम चर्चा करें इससे पहले पारस्परिक क्रिया के अर्थ और परिभाषा को स्पष्ट कर लें।

पारस्परिक क्रियावाद : अर्थ और परिभाषा

(Interactionism : Meaning and Definition)

पारस्परिक क्रियावादियों और क्लासिकल विचारकों में जैसा कि हमने ऊपर कहा है, बहुत बड़ा अन्तर है। पहला अन्तर तो यह है कि क्लासिकल विचारक सम्पूर्ण समाज की व्याख्या करते हैं। दूसरा, उनकी दृष्टि में समाज एक व्यवस्था है और इसलिए वे कभी-कभी व्यवस्था सिद्धान्तों की बात भी करते हैं। उनका कहना है कि मनुष्य के व्यवहार को व्यवस्था निर्धारित करती है। प्रकार्यवादी पार्सनस का निष्कर्ष है कि मनुष्य के

व्यवहार को मानदण्ड तथा मूल्य, जो व्यवस्था के अंग होते हैं, निश्चित करते हैं। कार्ल मार्क्स का विचार दूसरा है। उनका कहना है कि अन्ततोगत्वा मनुष्य के व्यवहार को बुनियादी संरचना ही निश्चित करती है।

पारस्परिक क्रियावाद प्रकार्यवाद से भिन्न है; यह मार्क्सवाद से भी जुदा है। पारस्परिक क्रिया में सामाजिक व्यवस्था की कोई गुंजाइश नहीं है, न ही सामाजिक क्रियावाद समाज को कोई वैधता देता है। [पारस्परिक क्रियावादियों का कहना है कि व्यक्तियों के माध्यम से समाज की व्यवस्थित व्याख्या की जा सकती है; समाज में सुधार भी लाया जा सकता है और इसलिए अध्ययन का केन्द्र समाज न होकर व्यक्ति होना चाहिए।]

✓ अर्थ और निर्वचन (Meaning and Interpretation)

पारस्परिक क्रियावाद का अर्थ है : यह दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच होने वाली क्रिया है। पारस्परिक क्रियावादी इन अन्तः क्रियाओं की प्रक्रिया को समझने का प्रयास करते हैं। अन्तः क्रिया के पीछे मान्यता यह है कि वे लोग क्रिया जो करते हैं, उनकी यह क्रिया अर्थपूर्ण होती है। इस क्रिया के अर्थ को या क्रिया की गतिविधियों में जो लोग संलग्न होते हैं, वे इसे समझते हैं। एक उदाहरण लीजिए। एक पुरुष और स्त्री अन्धेरे कमरे में लालटेन लगाने का प्रयास कर रहे हैं। क्या अर्थ है, लालटेन लगाने का। हो सकता है कमरे की बत्ती चली गई है और वे रोशनी के लिए लालटेन लगा रहे हैं। इसका दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि उनका खाना तैयार है, मेज पर परोसा हुआ है और वे इसे ठण्डा नहीं करना चाहते, इसलिए लालटेन लगा रहे हैं। एक तीसरा अर्थ भी हो सकता है, उन्होंने कुछ अतिथियों को आमन्त्रित किया है। उनके सामने अन्धेरे में बैठना ठीक नहीं होगा।

पारस्परिक क्रियावादी कहते हैं कि जो कुछ भी गतिविधि होती है, वह अर्थपूर्ण होती है और इसका अर्थ कर्ता निकालता है। इसी अर्थ का अध्ययन पारस्परिक क्रियावादी करते हैं।

अर्थ के लक्षण (Characteristics of Meaning)

गॉफमैन ने क्रिया के कतिपय लक्षणों को बताया है। ये लक्षण इस भाँति हैं :

1. किसी भी क्रिया के अर्थ निश्चित नहीं होते, अर्थ हमेशा सन्दर्भ पर निर्भर करता है। जब किसी गतिविधि का अर्थ निकाला जाता है तब गतिविधि का सन्दर्भ क्या है? यह भी देखना आवश्यक है। ऊपर के दृष्टान्त में शायद बारिश के दिन हैं, सूना जंगल है और साँप, बिच्छू निकलने का भय है इसलिए लालटेन लगाया जा रहा है। बारिश का मौसम, सूना जंगल, साँप-बिच्छू का भय आदि सन्दर्भ है और इन्हीं को ध्यान में रखकर लालटेन लगाई जा रही है। वास्तविकता यह है कि क्रिया के अर्थ निकाले जाते हैं, उन्हें विकसित किया जाता है, उनमें संशोधन होता है और मौका पड़े तब इनके अर्थ को भी बदल दिया जाता है।

2. पारस्परिक क्रिया के अर्थ को केवल कर्ता ही नहीं निकालता। इस क्रिया से जो भी लोग जुड़े होते हैं, वे भी क्रिया का निर्वचन करते हैं। ऐसा संभव है कि जो अर्थ कर्ता निकाले, वही अर्थ दूसरा व्यक्ति भी निकाले, यह आवश्यक नहीं है। अपने मूल में अर्थ पारस्परिक होता है।
3. कर्ता और उससे अन्तः क्रिया करने वाला दूसरा व्यक्ति क्रिया का जो अर्थ निकालते हैं, उसका समूह और समाज भी अपना निर्वचन करते हैं। मुख्य बात यह है कि क्रिया का निर्वचन सूक्ष्म स्तर पर होता है, और यही अन्तिम अर्थ होता है।

पारस्परिक क्रियावाद में प्रयुक्त अवधारणाएँ (Concepts used in Interactionism)

गॉफमैन ने कुछ अवधारणाओं का उल्लेख किया है। ये अवधारणाएँ पारस्परिक क्रिया के विश्लेषण में सहायक होती हैं। क्रिया से जुड़ी अवधारणाएँ इस भाँति हैं :

1. एकरूप की अवधारणा (Self Concept)

परस्पर क्रियावादी सिद्धान्तवेत्ता कहते हैं कि क्रिया को करने वाले कर्ता अपने स्वयं के विषय में एकरूप (Self) विचारधारा विकसित करते हैं। होता यह है कि कर्ता जब दूसरों के सम्पर्क में आता है, तब वह अपने अनुभव के आधार पर अपने आप को एकरूप बना लेता है। उदाहरण के लिए-रेलगाड़ी में बैठने वाला व्यक्ति अपने अनुभव के आधार पर और विगत में उसका जो अनुभव रहा है उसकी बुनियादी पर वह समझने लगता है कि रेलगाड़ी में जैसे ही ध्यान चूका, जेबकतरे या चोर-उठाईगीरे माल पार कर जाते हैं। इस तरह एकरूपता जो उसने अपने अन्दर विकसित की है, वह अपने आप नहीं हुई है। वह कई लोगों के सम्पर्क में आता है, उसकी पारस्परिक क्रियाएँ होती हैं और इस तरह जैसा समाज होता है, अपने आप को वैसा बना लेता है। एक आदिवासी के परिवार में जब लड़की का जन्म होता है, तब वह खुश हो जाता है। खुश इसलिए होता है कि लड़की के बड़े होने पर उसके विवाह से उसे वधू मूल्य मिलेगा। इसी तरह हिन्दू जातियों में जब लड़का पैदा होता है तो यह समझ में आ जाता है कि परिवार की वंश परम्परा चलेगी, लड़का पिण्डदान देगा और परिवार के मुखिया को मोक्ष प्राप्त हो जाएगा। जैसा समाज होता है या जैसा समूह होता है, वैसा ही व्यक्ति की एकरूपता (Self) विकसित हो जाती है। इसी कारण कूले (C. H. Cooley, 1864-1929) ने व्यक्ति को समाज का दर्पण कहा है। मतलब हुआ, जैसा समाज होगा वैसा ही व्यक्ति भी होगा।

गॉफमैन पारस्परिक क्रियावादी थे और वे भी इस अवधारणा के भागीदार हैं। उन्होंने अपने एक लेख में बांधने वाले संकेतों (Tie Signs) की अवधारणा को रखा है। इससे उनका तात्पर्य यह है कि दूसरों के संकेतों के आधार पर लोग एक-दूसरे से जुड़ जाते हैं। जब कोई प्रसन्नता का अवसर होता है तब पारस्परिक क्रियाओं में लोग प्रसन्नता के वातावरण में भीग जाते हैं। इसी तरह मृत्यु के अवसर पर भी संकेत एक-दूसरे को जोड़ देते हैं। वास्तविकता यह है कि समाज में प्रतीक (Symbol) होते हैं और लोग इन प्रतीकों

के अनुरूप अपने आप को ढाल देते हैं। व्यक्ति के समाज का एकरूप होना ही पारस्परिक क्रिया की एक महत्वपूर्ण अवधारणा है।

2. अर्थ की संरचना (Construction of Meaning)

जब पारस्परिक सम्बन्ध होते हैं तब इन सम्बन्धों का अर्थ निकाला जाता है। कर्ता निश्चित अवस्थाओं में जब अन्तः क्रिया होती है, तब उसके अर्थ का निर्माण करते हैं। होता यह है कि अन्तः क्रिया या पारस्परिक सम्बन्धों में किसी न किसी भाषा का प्रयोग किया जाता है। लोग हाव-भाव बताते हैं और जब ऐसी परिस्थिति में पारस्परिक सम्बन्ध होते हैं, तब वे भाषा और हाव-भाव का निर्वचन करते हैं।

गॉफमैन ने जैसा कि हमने प्रारम्भ में कहा है, अपराध और बाल-अपराध का बड़ी गहनता से अध्ययन किया है। उन्होंने पागलखानों का अध्ययन भी बहुत निकटता से किया है। मनोरोगियों को वे पागलखाने के सन्दर्भ में समझने की कोशिश करते हैं। ऐसी अवस्था में क्रिया के अर्थ को जोड़-तोड़ कर निकाला जाता है।

3. भूमिकाओं का मोल-तोल (Negotiation of Roles)

परस्पर क्रियावादी लेखकों में गॉफमैन ने भूमिकाओं के मोल-तोल का प्रयोग बहुत अधिक किया है। सामान्यतया प्रकार्यवादी भूमिका का मूल्यांकन समाज के मापदण्डों के अनुसार करते हैं। प्रत्येक समाज भूमिका के साथ में जुड़े कार्यों का विवरण देता है। उदाहरण के लिए एक शिक्षक की भूमिका शिक्षण और अनुसंधान करना है। इसी भूमिका के आधार पर समाज व्यक्तियों को देखता है। गॉफमैन प्रकार्यवादियों की इस विचारधारा को नहीं मानते। वे कहते हैं कि कर्ता जब किसी क्रिया को करता है, तब वह समाज या व्यवस्था के अनुसार भूमिका का मूल्यांकन नहीं करता। वह तो स्वयं की एकरूपता के अनुसार भूमिकाओं का मोल-तोल करता है। दो व्यक्ति विवाह के बन्धन में बंधते हैं पर इन दोनों को अपनी इस भूमिका का ज्ञान नहीं है जो पति-पत्नी के साथ जुड़ी हुई है। होता यह है कि यह दोनों पारस्परिक क्रियाओं द्वारा अपनी भूमिका का मोल-तोल करते हैं। गॉफमैन का निष्कर्ष है कि पारस्परिक क्रिया के सन्दर्भ में व्यक्ति परिस्थिति के अनुसार भूमिका का मोल-तोल करता है। समाज ने भूमिका का जो अर्थ लगाया है, उसे व्यक्ति पारस्परिक क्रिया में जैसा का तैसा नहीं ले पाता। इसमें वह अपने स्वयं का मोल-तोल करता है, निर्वचन करता है, व्याख्या करता है।

गॉफमैन अव्वल दर्जे के पारस्परिक क्रियावादी सिद्धान्तवेत्ता थे। इसी कारण उन्होंने पारस्परिक क्रिया से जुड़ी हुई कतिपय अवधारणाओं को विकसित किया है। इन्हीं अवधारणाओं के आधार पर उन्होंने अपना सिद्धान्त बनाया है।

4. पारस्परिक संरचना की अवधारणा (Concept of Structures of Interaction)

गॉफमैन का तर्क है कि सभी पारस्परिक क्रियाएँ एक समान नहीं होतीं। कुछ पारस्परिक क्रियाएँ उपचारी (Remedial) होती हैं। कुछ विनिमयात्मक (Interchange) होती हैं।

अभिवादन करना, धन्यवाद देना और इस प्रकार की कई पारस्परिक क्रियाएँ केवल सहायक मात्र होती हैं, जैसा उन्होंने कहा, वैसा ही हमने भी कर लिया। इस अवधारणा में गॉफमैन यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि सभी पारस्परिक सम्बन्धों की संरचना एक जैसी नहीं होती। कुछ क्रियाएँ उपचारी होती हैं और कुछ सहायक।

गॉफमैन का कहना है कि यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि पारस्परिक क्रियाएँ अनिवार्य रूप से अन्तिम स्वरूप में नहीं होतीं। कर्ता बराबर इन क्रियाओं को बनाता है, बिगाड़ता है और संशोधित करता है। दरअसल देखा जाए तो क्रियाओं का कोई निश्चित क्रम नहीं होता। ये क्रियाएँ बराबर बदलती हैं, और संशोधित होती हैं।

5. एकरूपता की संरचना (Structure of Self)

आदमी जब तक जीवित होता है पारस्परिक क्रिया करता है। व्यक्ति की पारस्परिक क्रियाएँ समाप्त हो गई यानी व्यक्ति मर गया। गॉफमैन ने पारस्परिक क्रियाओं की एकरूपता (Self) पर क्या अवधारणा रखी है? पारस्परिक क्रिया के विश्लेषण में गॉफमैन की इस तथ्य में रुचि थी कि व्यक्ति की एकरूपता में समाजशास्त्रीय क्या है? जैसी मनोवैज्ञानिक, उपन्यासकार या कथालेखक व्यक्ति की भावनाओं, संवेगों और प्रेरणाओं पर चर्चा करते हैं, इनमें गॉफमैन को कोई रुचि नहीं थी। व्यक्ति क्या करता है और क्या नहीं करता, इसमें उन्हें कोई दिलचस्पी नहीं थी। उपन्यासकार प्रेमचन्द्र के "गोदान" में होरी और उसकी पत्नी के सम्बन्ध कैसे हैं, उससे पारस्परिक क्रियावादियों का कोई सरोकार नहीं है। गॉफमैन तो व्यक्ति की एकरूपता (Self) को समाजशास्त्रीय दृष्टि से देखना चाहते थे। वे तो एकरूपता को सामाजिक संस्था की तरह समझते हैं और इसमें समाजशास्त्रीय यह है कि व्यक्ति की एकरूपता बाहर से किस भाँति संस्थागत है।

वास्तव में गॉफमैन के सिद्धान्त का केन्द्रीय तत्त्व उनका समाजशास्त्र है। जिसे मनोवैज्ञानिक "स्व" यानी अहम् कहते हैं, वह केवल मनोवैज्ञानिक ही है, लेकिन एकरूपता (Self) समाजशास्त्रीय है। इसका अर्थ यह है कि समाज और समूह जैसे होते हैं, वैसी ही व्यक्ति की एकरूपता बन जाती है। व्यक्ति समाज के अनुरूप बन जाता है। उन्होंने एकरूपता के तीन प्रकार बताए हैं :

1. स्व की अभिव्यक्ति (The Presentation of Self) : जिस प्रकार से नाटक के अन्दर किरदार अपने रटे-रटाए संवाद को बोलता है, तब इसमें कर्ता का खुद का कुछ नहीं होता। वह तो कथा या संवाद लेखक की जो भाषा है, उसी को उगल देता है। यहाँ वस्तुतः व्यक्ति की दो एकरूपताएँ होती हैं। प्रथम एकरूपता तो उसके स्वयं की होती है और दूसरी एकरूपता संवाद लेखक की होती है। अमिताभ बच्चन कहते हैं कि वे तो वही कहते हैं जो संवाद लेखक कहता है, लेकिन कभी-कभी उनके मन में होता है कि जो संवाद लेखक ने कहा है, सही नहीं है और तब वे विरोध-स्वरूप अपने स्वयं की बात कह देते हैं। यह उनका असली किरदार

है। इस भाँति एक तो अभिनेता की एकरूपता (Self) होती है और दूसरी संवाद लेखक की। इस प्रकार हमें एकरूपता (Self) की संरचना को दो भागों में देखना चाहिए।

2. **संस्थागत एकरूपता (Institutional Self)** : यहाँ पर गॉफमैन ने पारस्परिक क्रिया को पागलखाने में खोजने की कोशिश की है। जैसे सभी पागलों का व्यवहार होता है, वैसे ही कर्ता का व्यवहार भी होता है। यहाँ उनकी एकरूपता (Self) पागलखाने की संस्था निर्धारित करती है। वैसे व्यक्ति तो कहना चाहता है कि "मैं पागल नहीं हूँ।" लेकिन संस्थागत नियम कहते हैं कि कर्ता जो भी क्रियाएँ कर रहा है, वे समाज द्वारा स्वीकृत नहीं हैं; वे समाजविरोधी हैं। यहाँ हमें स्पष्ट रूप से व्यक्ति की दो एकरूपताएँ (Selves) दिखाई देती हैं, एक तो स्वयं कर्ता की और दूसरी संस्था की।
3. **शरीर की प्रासंगिकता (Relevance of Body)** : कई बार प्रासंगिकता को भौतिक या शारीरिक रूप से भी प्रदर्शित किया जाता है। इसे गॉफमैन लिंग और जेंडर विज्ञापन (Sex and Gender Advertisement) कहते हैं। आजकल समाजशास्त्र में जेंडर का प्रयोग फैशनेबल है। इसके द्वारा पारस्परिक क्रिया की जाती है। जब हम एकरूपता की संरचना को देखते हैं, तब इसका बहुत बड़ा स्वरूप शरीर या यौन के माध्यम से देखने मिलता है। उत्तर आधुनिकतावादी कहते हैं कि आज का युग संचार प्रधान है और इस युग में स्त्रियों को विज्ञापनों के माध्यमों से बाजार में लाया जाता है। यह भी एक पारस्परिक क्रिया है।

गॉफमैन की अध्ययन विधियाँ (Methodology of Gaffman)

अगर हम क्लासिकल विचारकों के सन्दर्भ में देखें तो स्पष्ट हो जायेगा कि गॉफमैन इन विचारकों से एकदम जुदा हैं। गॉफमैन की अध्ययन विधि अवलोकन थी। यह कहा जाता है कि गॉफमैन की निगाहें या वस्तुओं को देखने का नजरिया बहुत तीव्र था। उनके विरोधी भी यह स्वीकार करते हैं कि वे छोटी-छोटी वस्तुओं को बहुत तीव्रता से देखते थे। रॉबिन विलियम्स (Robin Williams) ने अपने द्वारा सम्पादित पुस्तक की सोशियोलोजिकल थिंकर्स (Key Sociological Thinkers, 1998) में अवलोकन के तीन प्रकार बताए हैं : (1) जातीय अवलोकन (Ethnographic Observation), (2) प्रकृतिवादी अवलोकन (Naturalistic Observation), और (3) द्वैतीयक अवलोकन (Secondary Observation)।

1. जातीय अवलोकन (Ethnographic Observation)

वास्तव में समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों में जब पारस्परिक क्रिया सिद्धान्त प्रचलित हुआ था, तब इसका आग्रह यही था कि सामाजिक संरचना में व्यक्ति के निर्माण की संभावना बहुत अधिक है। पारस्परिक क्रिया सिद्धान्त के बाद एक और सिद्धान्त समाजशास्त्र में आया